सेकेंड नौ हज़ार बहत्तर सौ

(देवी के दुनिया दर्शन)

विभा रानी

सेकेंड नौ हज़ार बहत्तर सौ

(देवी के दुनिया दर्शन)

विभा रानी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2026

© विभा रानी

सूची

भूमिका 4

पहचान 6

जय माता दी 10

शर्म 13

विश्वास 15

कमीशन 17

धारण 21

देह की दुनिया-1 26

देह की दुनिया-2 28

देह की दुनिया-3 30

मन चाहे तो मेरे मौला 34

फ़ालतू सवाल 38

उत्तरदायित्व 40

लाल आँसू 42

पोजीशन 45

काम की खोज 48

सम्मान 51

मनतुरनी 54

पूजा 56

निमंत्रण 59

जीत 60

पहला पाठ 62

राजनीति 63

परिणाम 64

हँसी की खोज 65

पीली पुस्तक 69

तोहफा प्यार का: विद स्पेशल डिस्काउंट 72

रेप 75

अंतर 78

मासूम सवाल 81

हद- बेहद 84

सेकेंड नौ हज़ार बहत्तर सौ 86

भूमिका

अपने लोक में देवी के समानार्थी शब्द नहीं मिले तो वे चल पड़ीं उसे ढूँढने बाहर। संभवत: धरती धाम। बहुत सुन रखा था उन्होंने इसका नाम! पता था कि सीता, राम, कृष्ण आदि ने लिए हैं अवतार इस धरा- धाम पर। समाचार मिलते रहे हैं कि धरती पर भी सबसे पवित्र धरा- अंश, भू भाग है आर्यावर्त, जिसे सम्पूर्ण विश्व भारत और अब इंडिया के नाम से जानता है। देवी ने इस धरा पर पग धरने की धारणा धारण कर ली। वह भी अकेले! देवी- स्थल पर खलबली मच गई। सभी ने मन- मन भर के किस्से गढ़े और देवी को सुनाए ताकि वे मन से वहाँ जाने से मना कर जाएँ। तब तो और भी, जब वे अकेले ही इस हरी- भरी वसुंधरा की हरीतिमा, यहाँ की नदियों, पहाड़, जल- जंगल आदि का आस्वाद लेने को आकुल- व्याकुल हो रही थीं।

इधर देवी! वे सोच रही थीं- 'आह! यहाँ का विविध सौन्दर्य! अनेकता में एकता की छवि! सर्वधर्म समभाव की समरसता! तरह- तरह के खान पान, वेश भूषा, भाषा- बोलियाँ! इससे भी सुंदर कुछ हो सकता है भला! और इन सबका आनंद तो अकेले ही लिया जा सकता है।

सो, देवी निकल पड़ीं अपनी यात्रा पर, बिना किसी को बताए! और निकल कर वो देखिए, पहुँच गई हैं अपने प्यारे देश- इंडिया! अपने धरा- धाम से निकलीं और प्रवेश कर गईं

एक मंदिर में, जहां उनके नाम की जय- जयकार हो रही थी। वे कहाँ- कहाँ गईं, आपको थोड़े बहुत विवरण मिलेंगे, क्योंकि यह उनकी बहुत सीक्रेट, यानि गुपचुप यात्रा थी। कहीं- कहीं, कभी- कभी मिल गई। इसलिए थोड़ा बहुत लिख पाई। बाकी तो देवी ने भी न तो किसी को कुछ सुनाया, ना कभी लिपिबद्ध ही किया। कभी मिल जाएँ, तो पूछ अवश्य लीजिएगा! हाँ, इतना अवश्य किया कि मेरे लिखे पर अपना विश्वास बनाए रखा। थोड़ी बहुत एडिटिंग अर्थात अपने मन से इसे सुधारा, संवारा और मेरे हवाले कर दिया। अब देवी ए विश्वास के जानिब, यह सारी बातें, आपके हवाले!

विभा रानी

पहचान

पृथ्वी पर आने के बाद देवी ने सभी को अपना परिचय देना चाहा।

'मैं देवी हूँ।'

'पूरा नाम बोलिए- कमला देवी, सरोज देवी, शान्ता देवी…'

'नहीं, नहीं, मैं स्त्री नहीं हूँ…!'

'तो क्या ताली बजानेवाले जमात की हैं?'

'नहीं, नहीं मेरा तात्पर्य, मैं इस लोक की स्त्रियों जैसी नहीं हूँ कि नाम के आगे शान्ता, कमला वगैरह लगाना पड़े।'

'तो फिर क्या स्वर्ग से आई हैं?'

'हाँ, हाँ, सही पहचाना आपने।'

'ओ मैडम, किसी और को बेवकूफ बनाइए।'

'ओह, आप समझते क्यों नहीं? अब जैसे, आप देवता कहते हैं न, देवता, ईश्वर, भगवान, परमात्मा, सुर, देव... उसी तरह से मैं देवी, यानी कि... अर्थात…"

देवी ने अपने लिए देवता के बरक्स अपने नाम के पर्याय बोलने चाहे, मगर उन्हें अब पता चला कि उनके लिए तो और कोई पर्यायवाची शब्द हैं ही नहीं।

'हाँ, हाँ बोलिए, देवी मतलब…?'

‘मतलब, मतलब...’ और अंतिम अस्त्र के रूप में विधर्मी भाषा ने सहारा दिया- ‘मतलब गॉडेस... हाँ!’

‘मैडम, गॉडेस या देवी के रूप होते हैं। शक्ति के लिए दुर्गा, काली, सहनशक्ति के लिए सीता, रूप के लिए पार्वती, विद्या के लिए सरस्वती, धन के लिए लक्ष्मी...! आप इनमें से कौन सी हैं?’

‘मैं इन सबमें हूँ। ये मेरे ही स्वरूप हैं। लेकिन मैं यह सब नहीं कहलाना चाहती...। मैं देवी हूँ, देवी ही रहना चाहूती हूँ।’

देवी की बात पर किसी ने यक़ीन नहीं किया। देवी को समझ में आया कि लिंगगत भेद तो स्वर्ग से ही विद्यमान है। पुरुष वर्चस्व यहाँ भी है। जभी तो देवता के इतने नाम और देवी का कोई नाम ही नहीं, उनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं। वे मात्र भूमिका में ही हैं- शक्ति स्वरूपा, विद्यास्वरूपा, दयास्वरूपा, समृदधिस्वरूपा...।

कहते हैं, तभी से देवी ने अपने अस्तित्व की लड़ाई छेड़ी, जो इस हरी- भरी वसुंधरा तक आकर एक आंदोलन में बदल गई।

###